शादी के बिचौलिया

सुनीता मलिक सोलंकी

पुराने समय में तो शादी ब्याह के रिश्तों में बिचौलिए की भूमिका भी बडी महत्वपूर्ण होती थी । आज भी इनकी भूमिका को पूर्णतः नकारा नहीं जा सकता ।आज भी सब शादियां लव मैरिज नहीं हैं। इसलिए कुछ केस में बिचौलिए बिना आज भी शादी ब्याह होने बेहद मुश्किल हो गये हैं। वैसे तो आजकल नेट से भी बिचौलिया जैसा काम ले रहें हैं लोग-बाग। मगर मुझे तो नेट सिर्फ ऐसा लगता है जैसे कि- हम गुगल से रास्ता पूछ रहे हों !और जरा सी चूक होते ही गुग्गल हमें राह भटका कर कहीं का कहीं ...कयी किलोमीटर तक धक्के खिलाता रहता है ...!

और बिचौलिए की जरूरत आज भी इसलिए भी पड़ती है कि- गांव देहात में हर जगह तो नेट से सर्च करके शादियाँ नहीं हो सकती, वें आज भी एक जमीनी माध्यम तलाशते हैं , दूसरी बात कि- अगर कोई लड़के या लड़की वाले हैं, तो वें डायरेक्ट ही लड़की वाले से या लड़के वाले से अपने विषय में खुलकर नहीं बता पाते। यह काम बिचौलिए कैसे भी जरा मरा झूठी सच्ची बातों को तोड़मोड़ कर ऐसे पेश करेगा...अगर नमक मिर्च लगाकर भी रिश्ता बरकरार रख जा सका तो बिचौलिए इससे भी पीछे नहीं हटते और दोनों साइड़ की बातें संभाल लेते हैं । जोड़ जुगाड़ से ना होने वाली शादियाँ भी बिचौलिए ही करवा पाते हैं।लिहाजा समाज में इनके महत्व को नकारा नहीं जा सकता ।

आज मैं आप लोगों के सामने जो कहानी रखने जा रही हूं बहुत नयी तो नहीं है, आए दिन ऐसी वैसी घटनाएं आप सब कहीं ना कहीं से सुनते रहते होंगे !

मगर इस कहानी को सुनने के बाद आप सोचने को मजबूर तो जरूर होंगे, कि अद्भुत कहानी है। यदि अचम्भित नहीं हुए तो होना ही चाहिए।

लड़के वालों को तो खास तौर से बिचौलिए चाहिए ही चाहिए, क्यूंकि अपने लड़के के लिए लड़के का बाप लड़की का हाथ मांगने की पहल आज भी शीघ्रता से नहीं कर पाता । अपवाद रूप में ही कोई बाप बेटे के लिए रिश्ता मांग लेता है। उसका कारण यह भी कि- कहीं लड़की वालों ने मना कर दिया तो ...! लड़के वालों की मनोस्थिति सामान्य नहीं रहती। यही हाल लड़की को देखकर मना कर देने पर लड़की के बाप का भी होता है , इसे भी हम झुठला नहीं सकते। खैर आखिर में जोड़िया संयोग कहकर हम सभी खुद को संभाल भी लेते हैं।

इसी वजह से बिचौलिए जो होते हैं यह दोनों तरफ का रोल अदा करते हैं।जिससे हाँ ना का बोझ दोनों परिवारों पर कम पड़ता है।सब ठींकरा बिचौलिए के सिर फोड़ा जा सकता है ।

अगर कोई चीज सही हुई तो वह आगे आते हैं , और कोई चीज गलत हुई तो भी आगे आकर दोनों ही पार्टियों को संतुष्ट कराते हैं। वें दोनों परिवारों की इज्जत भी बचाते है, हर हाल में इज्जत के लिए ईमानदार बिचौलिए होना जरूरी। आजकल जब बिचौलिए की जरूरत समाप्त प्रायः हो गयी है,मगर अपवाद स्वरूप बिचौलिए आजकल भी होते है । शादी के लिए जब सब राहे बंद हों तो बिचौलिए दोनों पार्टियों

ISSN:2583-8849

का भला बुरा समझते हुए बडी जिम्मेदारी निभाते हैं।

यह तो हुआ बिचौलिए की महत्व!

शादी एक पवित्र रिश्ता है।जो मरते दम तक पति -पत्नी को साथ निभाना होता है, इस बंधन को पति और पत्नी को ऐसे निभाना चाहिए कि दोनों के रिश्ते में कभी दरार ना आए और जिंदगी भर रिश्तों में मिठास बनी रहे। शादी केवल सुंदरता के आधार पर ही नहीं परंतु गुणों को भी शादी से पहले जरूर जान लेना चाहिए।मगर गुण जानना मुश्किल काम है।

#मगर मेरी राय में आज के जमाने में -गुणों से भी पहले लड़के लड़की की रज़ामंदी बहुत जरूरी हो जाती ! कई बार घर वालों का या बिचौलिए के दबाव में आकर लड़का और लड़की की शादी कर तो दी जाती है , लेकिन बाद में वह शादी चलती ही नहीं है। शादी हो जाने के बाद रिश्ते को ठुकराया जाना..! हमारे समाज में आज भी परिवार के लिए अपमान जनक माना जाता है।

वैवाहिक रिश्तों में पारदर्शिता का होना अतिआवश्यक है।अपनी कमियां पहले ही बोल कर बता देने में किसी प्रकार की कोई हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए।

#सुनिए एक कहानी जो कि- सुन रहे हैं आप बिचौलिए की मु-जुबानी। सुनकर आज के समाज को आइना दिखाती हुई कुछ अजीबोगरीब सा किस्सा

होता हुआ नजर आया।

आप बहुत दिनों में दिखाई दिए अंकल जी सुधा ने राजपाल से पूछा ...? जो कि इस शादी के बिचौलिए और बुजुर्गवार पुरूष हैं, कॉलोनी के ।उन्हीं का नाम है राजपाल सिंह।

सुधा एक महिला जो कि घर के पास वाले पार्क में ठहरने जाती है, और काफी दिनों से जो राजपाल सिंह को घूमने आता न देखकर,नजर पड़ते ही नजदीक जाकर राम राम कर पहले उनके हाल चाल पूछती हैं! और फिर ना आने का कारण!

और सुधा जल्दी में तो थी ही फटाफट पूछती चली गयी और चलती रही ठीक तो हो ना अंकल जी ? घर में सब ठीक हैं ? बहू बेटे बेटियां? मैं

तो सोच रही थी कयी दिन से कि अंकल जाने कहाँ चले गये , घूमने भी नहीं आते ।

राजपाल जी बोले मैं तो ठीक हूं सुधा!

और राजपाल जी जो कि- थोड़े बुजुर्गवार थे, टहलते हुए इतनी बातों का जवाब नहीं दे पाते,,,, तो पार्क में चलते चलते बराबर में सीमेंट से बनी हुई सीट पर बैठते हुए उन्होंने सुधा को भी बैठने का इशारा किया, और सुधा बैठ गई ,सुधा को घर जाने में देर तो हो रही थी, लेकिन बात तो सुधा ने ही छेड़ी है भले ही उनका हाल चाल औपचारिक रूप से ही जानना चाहा हो सुधा ने ! इसलिए सभ्यता वश अब बैठना ही पड़ेगा। यह सोच सुधा भी उसी सीट के दूसरे छोर पर बैठ गयी ।

सुधा को एक बार ख्याल आया कि हे भगवान मैने भी अंकल जी को गलत वक्त छेड़ दिया ,और यें भी तो जैसे भरे बैठे हैं कुछ जो मुझे भी बैठा लिया सुनाने को। कोई देखेगा कोलीनी वाला तो कहेगा यें आज क्या बात कर रहें है । मगर सुधा ने इस बेकार से ख्याल को झिड़का ।और सुधा ने सोचा कि हम दोनों परिपक्व उम्र में ही तो है ,तो कोई कैसे गलत अनुमान क्यों लगाएगा .? अंकल हैं ये तो कॉलोनी भर के ...यह सब विचार सुधा के जहन से हवा की गति से आया और चला गया।

ISSN:2583-8849

और निश्चित होकर राजपालजी से उनकी कहानी सुनने बैठ गयी।

सभी लोग तो कॉलोनी के हम दोनो को जानते हैं तो इस बात का कोई भी ड़र नहीं था कि- यह दोनों पार्क में बैठे क्या कर रहे हैं? सुधा यह सब सोच ही रही थी कि- सुधा के पति भी सुधा को ढूंढने ,बुलाने पार्क में चले आए। अब दोनों पति पत्नी और राजपाल सिंह तीनों आराम से उस बैंच पर बैठे हैं।

सुधा ने उस दिन तन्मयता से राजपाल जी के मुख से जो किस्सा सुना वह अविस्मरणीय है,,,, और आज के समाज के लिए एक कड़ी चुनौती पूर्ण किस्सा।

राजपाल सुधा से मुखातिब होकर बोले- अरे बिटिया क्या बताऊँ अपनी हालत एक ब्याह का बिचौलिया बन गया था तेरा अंकल ,बस नाक में दम हो गया। जिस लड़की के लिए लड़का बताया था उसी लड़की ने ही नाक कटवा दी मेरी तो ।

आज किसी को लड़की या लड़का बताना का धर्म नहीं रहा बेटा! ,बिचौलिए को शादी के बाद में जूतों पिटते तो सुना , मगर ये तो कुछ अजीब ही हुआ मेरे साथ। मैं ही जूतों से पिट लेता अच्छा था ,मगर कम से कम दोनों परिवारों की जो भद पिटवाई लडकी ने वो तो बच जाती।

सुधा अब किस्सा सुनो! दुल्हन बनी उस लड़की ने ससुराल में जाते ही उसी रात दुल्हन ने अपने घर फोन किया फोन लड़की की माँ ने उठाया , लड़की की बात सुनकर माँ के चेहरे की हवाइयाँ उड़ गयी । कि- मुझे कल सुबह लेने आ जाओ मम्मी,मेरा मन नहीं लग रहा , या मुझे यहाँ नहीं रहना,जो भी उसने कहा सुधा वो सब उसकी माँ ही जानती है , इत्तेफाक से उस दिन मैं भी लड़की के पिता चौधरी रतन सिंह के पास ही बैठा था उस दिन , हम उम्र तो नहीं मगर हम मित्र थे दोनों पारिवारिक आवाजाही भी थी लड़की के परिवार के साथ हमारी।

दुल्हन का नाम शालू है , शालू का फोन उसकी मम्मी ने उठाया बड़ी उत्सुकतावश कि बेटी की राजी खुशी सुनकर हर्ष होगा । मगर ये क्या वह कह रही है मैं नहीं रहूंगी ससुराल में मुझे ले जाओ,मुझे ले जाओ ।

उधर ससुराल में लड़की के सास-ससुर ने भी नयी दुल्हन के मुहं से यह सब सुना तो अचम्भित हुए ; मगर फिर नकारात्मक विचार को धकेलकर सोचने लगे कि शायद आजकल लाड दुलार से पली बेटियाँ हैं , मन नहीं लग रहा होगा, शादी का घर है अभी मेहमान भी रूके हैं अधिकतर कोई जा चुका तो कोई रात में या कोई अगली सुबह निकलने ही वाले थे।बात पूरे घर में सैकिडों में आग की तरह फैल गयी ।सब अपने हिसाब से दुल्हन का मन लगाने की कोशिश में जुटे, मगर कोई फर्क नहीं पड़ा, दुल्हन किसी से सीधे मुहं बात ही नहीं कर रही थी ।सास ससुर ने सोचा कि शायद लड़की का नयी जगह मानकर मन नहीं लग रहा हो , चलो चली जाएगी , धीरे धीरे एडजस्ट हो जाएगी।

इधर लड़की के पिता रतन सिंह ने पत्नी का नाम लेते हुए कहा कि- ऐसा क्या उर्मिला!जो बिटिया ऐसे बोल रही है , मैं जो कि वहीं बैठा था तो मेरे भी कान वजह जानने को उत्सुक हो गये सुधा बेटा। अब सुधा के पति और सुधा दोनो को ही राजपाल जी की बातों का आनन्द आ रहा था , वें एकाग्र मन से सुन रहे थे कि आखिर लड़की ने ऐसा क्यूं किया।

सुधा बोली तो फिर आगे क्या हुआ अंकल जी- होना क्या था सुधा बस अगले दिन सुबह सुबह लड़की के भाई लेने चले गये और दुल्हन अगले ही दिन अपने घर आ

ISSN:2583-8849

गयी । और घर आकर कहने लगी कि अब कभी ससुराल नहीं जाना है मुझे।

सबने जानना चाहा कि ऐसा क्या हुआ शालू? और पूछा कि कुछ कारण तो होगा ?

शालू बोली- सब कुछ अच्छा है ! कुछ कमी हो तो बताऊँ।

शालू की माँ बोली- फिर क्यूँ छोड़ना चाहती हो?

शालू- बस जाना ही नहीं मुझे तलाक चाहिए! बहुत समझाने पर भी जब शालू जाने को तैयार न हुई तो दोनों साइड़ के घर वालों ने थक हार कर तलाक करवा दिया।

सुधा जो कि राजपाल जी से किस्सा सुन रही थी।

यह बात बताते बताते राजपाल जी अब इतने विचलित हो गये कहने लगे कि -बताओ सुधा आज समाज में लड़कियों का कैसा रोल होता जा रहा है।

सुधा ने पूछा कि - क्या लड़की की गलती थी ,या लड़के की? किस कमी से तलाक हुआ ! यह तो बताओ आप अंकल जी!

राजपाल बोले तो सुनो - मैं चूंकि ब्याह करवाने में था,दोनों तरफ के लोगों को जानता था ! दोनों ही फैमिली सरल साधारण अच्छे स्वभाव के थे ।

मैंने उस दिन सोच लिया था कि- आज शालू से यह जरूर पूछूंगा कि - कारण तो बताओ शालू! और मैं जूते पहन कर अपनी छडी उठाकर उसके घर की ओर चल पड़ा।

दरवाजा बिटिया ने ही खोला बोली अंकल जी नमस्ते! मैने कहा -कैसी हो शालू आओ तुमसे बात करने आया हूं आज तो मैं।

शालू आज जब सब कुछ तुम्हारे मन मुताबिक ही हो गया है तो मुझे ये तो बता दे बिटिया कि ऐसी क्या कमी लगी तुझे उनमें जो तूने तलाक की मांग क्यूँ की ?

या तुझे कोई और लड़का पसंद था , तो तुझे बताना चाहिए था, शादी से पहले ही ...!

घंटो पूछने पर भी कोई संतुष्टी भरा जवाब नहीं दिया शालू ने।

पर सुधा मैंने भी उस दिन सोच लिया था कि- आज बिन पूछे तो नहीं रहूंगा। खैर घंटो की जद्दोजहद के बात लड़की ने जो बताया ,कि अंकल जी कुछ कमी नहीं थी उनमें, मगर ये जो तलाक के बाद इतने रूपये मिल गये मुझे इस तलाक के बाद ..! वह बिन तलाक के कभी ना तो ससुराल वाले देने वाले थे , और ना ही मेरे मां बाप मेरे खाते में डालने वाले थे। आज माँ बाप ने तलाक के बाद मिला सारा पैसा मुझे ही दे दिया,अंकल जी ! अब मैं जो चाहे कर सकती हूं , आगे की पढ़ाई करूं या जो चाहे करूँ, शादी करूंगी तो जिससे भी करना चाहूँ करूँ! अपनी पसंद से .....!

और अंकल जी शादी की तो मर्जी है करूं तो करूं ना करूं तो ना सही ।

और 50 हजार रूपये महीने मैं कमा रही हूं , इंजीनियरिंग करने के बाद । शादी जरूरी नहीं है मेरे लिए।

यह सब सुनकर बिचौलिए सकते में आ गये और चुपचाप उठ कर अपने घर आ गये ।और बस इतना ही बोले- कि शालू बेटा मैं तो इतना ही जानता हूँ कि-

शादी बस तीन शब्दों के मंत्र से चलती है प्यार, प्यार, प्यार। जो तुम्हे मनुष्य से नहीं पैसे से हो गया।

मुजफ्फरनगर उप्र

ISSN:2583-8849